

दैनिक

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उज्जैन, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मीरजा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गान्धीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहागडच में प्रसारित

पानी की हर बूंद का महत्व समझें, करें वर्षा जल का संरक्षण -डॉक्टर आनंद कुमार सिंह

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने बताया कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उस जल का 70% उपयोग कृषि कार्य में होता है। अतः हमारी जिम्मेदारी भी अधिक है कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता की तकनीकों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण हेतु तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण हेतु मोटी मेड़, छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52%



से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर क्षरीत होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याएं देश के लिए चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण हैं। वर्ष 2050 तक पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। खेती बाड़ी में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता, विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सिंचाई जैसे सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व

बौछारी सिंचाई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है। जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हमें बाकी आठ से नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है। यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर लें, तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।

राष्ट्रीय स्वरूप

पानी की हर बूंद का महत्व समझें, करें वर्षा जल का संरक्षण: कुलपति

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने बताया कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उस जल का 70% उपयोग कृषि कार्य में होता है। अतः हमारी जिम्मेदारी भी अधिक है कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता की तकनीकों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण हेतु तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद



की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण हेतु मोटी मेड़, छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52% से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर क्षरीत होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याएं देश के लिए चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण हैं। वर्ष 2050 तक पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। खेती बाड़ी में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता, विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सिंचाई जैसे

सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बौछारी सिंचाई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है। जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हमें बाकी आठ से नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है। यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर लें, तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।



कृषि संस्कृति

नगर संस्करण

विश्ववार्ता

सच्ची खबर, पैनी नज़र

वैश्विक नेटवर्क की दिशा में कदम और 6 दर्यापारवा न शीतलपारवा में कट रहा दर्यापार 7 प्रदेश में फिर से उदरगत है 8

पानी की बूंद का महत्व और वर्षा जल के संरक्षण के महत्व को समझने की आवश्यकता : डॉ. आनंद कुमार सिंह

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक संस्थान के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने लोगों को पानी की हर बूंद के महत्व और वर्षा जल के संरक्षण के बारे में विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि जो जल वर्तमान समय में उपलब्ध है उसका 70% उपयोग तो कृषि कार्य में ही खर्च हो जाता है। अतः यह सबकी जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता की तकनीकों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण हेतु तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण हेतु मोटी मेड़, छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना

होगा। उन्होंने बताया कि विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52% से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर क्षरीत होती है। वर्ष 2050 तक पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

खेती बाड़ी में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता, विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सिंचाई जैसे सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बौछारी सिंचाई को अपनाना होगा। जिससे हमें बाकी आठ से नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है। यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर लें, तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।

पानी की हर बूंद का महत्व समझें, करें वर्षा जल का संरक्षण : डॉआनंद सिंह

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक के कुलपति डॉ.

आनंद कुमार सिंह ने बताया कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उस जल का 70% उपयोग कृषि कार्य में होता है। अतः हमारी जिम्मेदारी भी अधिक है कि वर्षा

जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता की तकनीकों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण हेतु तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि



कार्य के साथ जल संरक्षण हेतु मोटी मेड़, छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52% से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सही न होने पर क्षरीत होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याएं देश के लिए चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण हैं। वर्ष 2050

तक पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। खेती बाड़ी में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता, विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सिंचाई जैसे सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बौछारी सिंचाई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद

पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है। जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हमें बाकी आठ से नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है। यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर लें, तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।

लडि... 15... अ... खे... 15.07.2024... परमजीत

अमर उजाला 15.07.2024

पानी की हर बूंद का महत्व समझें

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने बताया कि उपलब्ध जल का 70 फीसदी हिस्सा कृषि कार्य में प्रयोग में आता है। इसलिए सबकी जिम्मेदारी है कि बारिश के जल का संरक्षण करें।

वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी

समस्याएं देश के लिए चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण हैं।

वर्ष 2050 तक पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि जुलाई-अगस्त-सितंबर में 90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। (ब्यूरो)

पानी की हर बूंद का महत्व समझें, वर्षा जल का संरक्षण करें

90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता: कुलपति



डॉ. आनंद कुमार सिंह

कानपुर, 14 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने बताया कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उस जल का 70 प्रतिशत उपयोग कृषि कार्य में होता है। अतः हमारी जिम्मेदारी भी अधिक है कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता की तकनीकों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण के लिए तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत की गहरी

जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण के लिए मोटी मेड़, छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना होगा। उन्होंने बताया कि विश्व में खेती में इस्तेमाल होने वाली जमीन 52 प्रतिशत से अधिक जल अपवाह के प्रबंधन सहान न होने पर क्षरीत होती है। वर्तमान में पर्यावरण से जुड़ी सभी समस्याएं देश के लिए चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण हैं। वर्ष 2050 तक पानी की कमी का सामना करना पड़

सकता है। खेती बाड़ी में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता, विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सिंचाई जैसे सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई व बौछरी सिंचाई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है। जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर

वर्ष 2050 तक पानी की कमी से जूझना पड़ सकता है देश को

रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हमें बाकी आठ से नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी। परंतु 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना है। यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर लें, तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।



किसानों को जल संरक्षण के साथ दी प्रबंधन एवम सिंचाई दक्षता की जानकारी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने रविवार को जल के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि जो जल हमारे पास उपलब्ध है उसका 70 फीसदी उपयोग कृषि कार्य में होता है। उन्होंने कहा कि वर्षा जल के संरक्षण के साथ-साथ जल के प्रबंधन एवं सिंचाई दक्षता की तकनीकों को अपनाना हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण के लिए तकनीकी प्रबंधन में रबी फसलों की कटाई के उपरांत खेत की गहरी जुताई करना, कटी मेड़ों को बांधना, हरी खाद की बुवाई आदि कार्य के साथ जल संरक्षण के लिए मोटी मेड़, छोटे खेत का प्रबंधन अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि वर्ष



2050 तक पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है। खेती बाड़ी में जल प्रबंधन में क्षेत्र आधारित जल की उपलब्धता, विशेष जलवायु को विशेष फसल पद्धति सिंचाई जैसे सूक्ष्म सिंचाई, टपक

सिंचाई व बौछारी सिंचाई को अपनाना होगा। जिसमें हर बूंद पानी का प्रयोग होता है। उन्होंने कहा कि देश में जल की कमी से अधिक जल के प्रबंधन की आवश्यकता है। जिसको हमारे कृषि विज्ञान केंद्र व विश्वविद्यालय गांव-गांव, खेत-खेत तक तकनीकी पहुंचाने में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि माह जुलाई-अगस्त-सितंबर के 90 दिन का जल प्रबंधन भूजल स्तर को ऊपर उठा सकता है। जिससे हमें बाकी आठ से नौ माह पीने का पानी कम नहीं होगा। तालाब, पोखर भरे रहेंगे खेतों में नमी संरक्षित रहेगी परंतु इसके लिए 3 माह जल संरक्षण पर सतर्क रहना होगा। यदि हम वर्षा जल को संरक्षित कर लें, तो पूरे देश-प्रदेश में जलस्तर बढ़ने के साथ-साथ जल उपलब्धता सुनिश्चित रहेगी।